International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

Independent Living of Children with Intellectual Disability

Ms. Neha Singh Yadav[1], Mr. Ashutosh Singh Singh[2]

[1]Assistant Professor In Department In Spl, Dept In Intelletual Disability, Dr Shakuntala Misra National Rehabilitation University
[2]Trainee In M.Ed Stu, Dept In Intelletual Disability, Dr Shakuntala Misra National Rehabilitation University

Abstract (सारांश)
यह शोधपत्र बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability) वाले बच्चों में स्वतंत्र जीवन कौशल (Independent Living Skills) के विकास पर केंद्रित है। बौद्धिक दिव्यांगता से प्रभावित बच्चों में दैनिक जीवन की गतिविधियों जैसे स्वयं की देखभाल, संचार, सामाजिक सहभागिता तथा निर्णय लेने की क्षमता सीमित होती है, जिसके कारण वे दूसरों पर अधिक निर्भर रहते हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ऐसे बच्चों में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कौशलों, शिक्षण रणनीतियों तथा सहायक सेवाओं का विश्लेषण करना है।
शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया है, जिसमें अवलोकन, साक्षात्कार तथा मानकीकृत उपकरणों के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि यदि बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से ही जीवन कौशल आधारित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा पारिवारिक सहयोग प्रदान किया जाए, तो उनकी स्वतंत्र जीवन जीने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार होता है।अध्ययन यह भी दर्शाता है कि समावेशी शिक्षा, सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology) और समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम (CBR) इन बच्चों की स्वायत्तता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निष्कर्षतः, यह आवश्यक है कि शिक्षकों, अभिभावकों और नीति-निर्माताओं द्वारा संयुक्त प्रयास किए जाएँ ताकि बौद्धिक दिव्यांगता वाले बच्चों को एक सम्मानजनक और आत्मनिर्भर जीवन जीने के लिए सक्षम बनाया जा सके।

Keywords (मुख्य शब्द): Independent Living, Intellectual Disability, Life Skills, Special Education, Inclusive Education, Rehabilitation

Introduction (परिचय)

बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) एक विकासात्मक अवस्था है जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता तथा अनुकूलन व्यवहार औसत से कम पाया जाता है। इस स्थिति का प्रभाव बच्चे के सीखने, संप्रेषण, सामाजिक सहभागिता, निर्णय-निर्माण तथा दैनिक जीवन कौशलों पर पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एवं अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीज (AAIDD) के अनुसार बौद्धिक अक्षमता की पहचान केवल IQ तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, व्यावहारिक एवं वैचारिक कौशल भी सम्मिलित हैं।
समाज में लंबे समय तक बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को पूर्णतः आश्रित मानकर उनके जीवन से जुड़े निर्णय परिवार या संस्थाएँ लेती रही हैं। परिणामस्वरूप, इन बच्चों में आत्मनिर्णय, आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान के विकास के अवसर सीमित रह गए। आधुनिक विशेष शिक्षा एवं मानवाधिकार आधारित दृष्टिकोण इस सोच को चुनौती देता है

और यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति को, उसकी अक्षमता की प्रकृति एवं स्तर के अनुरूप, स्वतंत्र एवं सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार है।

Independent Living की अवधारणा विशेष रूप से 1970 के दशक में दिव्यांग अधिकार आंदोलन के साथ उभर कर सामने आई ।इस अवधारणा का मूलविचार यह है कि दिव्यांग व्यक्ति अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं लेने में सक्षम हों और समाज उन्हें आवश्यक समर्थन प्रदान करे। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के संदर्भ में स्वतंत्र जीवन का उद्देश्य उन्हें उनकी क्षमताओं के अनुसार अधिकतम आत्मनिर्भर बनाना है।

Concept of Independent Living (स्वतंत्र जीवन की अवधारणा)

Independent Living का शाब्दिक अर्थ स्वतंत्र रूप से जीवन व्यतीत करना है, परंतु शैक्षिक एवं पुनर्वास के क्षेत्र में इसका व्यापक अर्थ है।यह अवधारणा आत्म निर्णय, समान अवसर, सामाजिक सहभागिता तथा गरिमा पूर्ण जीवन से जुड़ी हुई है।स्वतंत्र जीवन का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति बिना किसी सहायता के सभी कार्य करे, बल्कि इसका आशय यह है कि व्यक्ति को अपनी पसंद, आवश्यकता एवं जीवन शैली के संबंध में निर्णय लेने का अधिकार हो।

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए स्वतंत्र जीवन की अवधारणा निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है:

1. आत्मनिर्णय (Self-determination)
2. दैनिक जीवन कौशलों का विकास
3. सामाजिक सहभागिता एवं समावेशन
4. आवश्यकतानुसार सहायता (Supported Independence)

Intellectual Disability and Independent Living (बौद्धिक अक्षमता और स्वतंत्र जीवन)

बौद्धिक अक्षमता की तीव्रता (हल्की, मध्यम, गंभीर एवं अति-गंभीर) के अनुसार स्वतंत्र जीवन की संभावनाएँ भिन्न होती हैं। हल्की बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे उचित प्रशिक्षण एवं अवसर मिलने पर काफी हद तक स्वतंत्र जीवन जी सकते हैं। वे रोजगार, सामाजिक संबंध एवं दैनिक जीवन कौशलों में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम होते हैं।

मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए सहायक स्वतंत्र जीवन (Supported Independent Living) अधिक उपयुक्त माना जाता है, जिसमें वे दैनिक कार्य स्वयं करते हैं, परंतु जटिल निर्णयों में सहायता प्राप्त करते हैं। गंभीर एवं अति-गंभीर बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए पूर्ण स्वतंत्रता संभव न हो, फिर भी उनकी स्वायत्तता, पसंद एवं गरिमा का सम्मान किया जाना आवश्यक है।

Importance of Independent Living (स्वतंत्र जीवन का महत्व)

स्वतंत्र जीवन का महत्व केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव परिवार, समाज एवं राष्ट्र पर भी पड़ता है। इसके प्रमुख महत्व निम्नलिखित हैं:

1. आत्म सम्मान एवं आत्मविश्वास में वृद्धि
2. परिवार पर निर्भरता में कमी
3. सामाजिक समावेशन को प्रोत्साहन
4. जीवन की गुणवत्ता में सुधार
5. मानवाधिकार एवं गरिमा की रक्षा

Life Skills Required for Independent Living (स्वतंत्र जीवन हेतु आवश्यक जीवन कौशल)

1. **Daily Living Skills** (दैनिक जीवन कौशल)- इनमें व्यक्तिगत स्वच्छता, भोजन करना, कपड़े पहनना, समय प्रबंधन आदि शामिल हैं।
2. **Social Skills (सामाजिक कौशल)**- सामाजिक नियमों की समझ, संवाद, सहयोग एवं सामाजिक संबंध बनाए रखना।
3. **Communication Skills (संप्रेषण कौशल)**- मौखिक, अमौखिक एवं वैकल्पिक संप्रेषण माध्यमों का प्रयोग।
4. **Vocational Skills (व्यावसायिक कौशल)** - रोजगार या स्वरोजगार से जुड़े कौशलों का विकास।
5. **Decision Making Skills (निर्णय लेने का कौशल)**- अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं लेने की क्षमता।

Role of Family and School (परिवार एवं विद्यालय की भूमिका)-परिवार बच्चे के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की आधारशिला होता है। माता-पिता का सकारात्मक दृष्टिकोण, यथार्थवादी अपेक्षाएँ एवं निरंतर प्रोत्साहन बच्चों में आत्मनिर्भरता के विकास में सहायक होता है। विद्यालय में विशेष शिक्षक, जीवन कौशल आधारित पाठ्यक्रम, व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं समावेशी वातावरण स्वतंत्र जीवन की तैयारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Role of Community and Government (समुदाय एवं सरकार की भूमिका)-समुदाय और सरकार स्वतंत्र जीवन को साकार करने में सहायक तंत्र प्रदान करते हैं। सामुदायिक संसाधन, पुनर्वास केंद्र, व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान एवं सरकारी योजनाएँ बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

Challenges in Independent Living (स्वतंत्र जीवन में चुनौतियाँ)

1. सामाजिक पूर्वाग्रह एवं नकारात्मक दृष्टिकोण
2. संसाधनों एवं सेवाओं की कमी
3. रोजगार के सीमित अवसर
4. सुरक्षा एवं संरक्षण से जुड़ी चिंताएँ
5. प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी

Strategies to Promote Independent Living (स्वतंत्र जीवन को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ)

1. जीवन कौशल आधारित शिक्षा
2. समावेशी एवं व्यावसायिक शिक्षा
3. परिवार एवं समुदाय की सक्रिय भागीदारी
4. सरकारी नीतियों एवं योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन
5. परामर्श एवं पुनर्वास सेवाएँ

Objectives of the Study (अध्ययन के उद्देश्य)

1. बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में स्वतंत्र जीवन की अवधारणा का विस्तृत अध्ययनकरना।
2. स्वतंत्र जीवन हेतु आवश्यक जीवन कौशलों की पहचान करना।
3. परिवार, विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. स्वतंत्र जीवन में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
5. स्वतंत्र जीवन को बढ़ावा देने हेतु प्रभावी रणनीतियों का सुझाव देना।

Hypotheses of the Study (अध्ययन की परिकल्पनाएँ

H1 जीवन कौशल प्रशिक्षण का बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के स्वतंत्र जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

H2: माता-पिता एवं विद्यालय का सहयोग स्वतंत्र जीवन कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

H3: सहायक सामाजिक वातावरण बच्चों को स्वतंत्र जीवन के लिए तैयार करने में मदद करता है।

Methodology (अनुसंधान पद्धति)

Research Design (अनुसंधान अभिकल्प)

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

Population and Sample (समष्टि एवं न्यादर्श)

अध्ययन की समष्टि में बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे, उनके अभिभावक एवं विशेष शिक्षक सम्मिलित हैं। सुविधा जनक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया।

Tools for Data Collection (डेटा संग्रह के उपकरण)

प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया गया।

Data Analysis (डेटाविश्लेषण)

आँकड़ों का प्रतिशत एवं गुणात्मक विश्लेषण किया गया।

Ethical Considerations (नैतिक पक्ष)

प्रतिभागियों की सहमति, गोपनीयता एवं गरिमा का पूर्ण ध्यान रखा गया।

Conclusion (निष्कर्ष)

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए स्वतंत्र जीवन एक यथार्थवादी एवं प्राप्त करने योग्य लक्ष्य है। योजनाबद्ध जीवन कौशल प्रशिक्षण, सकारात्मक पारिवारिक दृष्टिकोण, विद्यालयीय सहयोग तथा सामुदायिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग से इन बच्चों की आत्मनिर्भरता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। स्वतंत्र जीवन न केवल बच्चों की जीवन-गुणवत्ता को बेहतर बनाता है, बल्कि एक समावेशी एवं समानतामूलक समाज के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होता है।

References

1. American Association on Intellectual and Developmental Disabilities. (2021). Intellectual disability: Definition, classification, and systems of supports (12th ed.). AAIDD.
2. Schalock, R. L., Verdugo, M. A., Gomez, L. E., & Reinders, H. S. (2016). Quality of life model development and use in the field of intellectual disability. Journal of Intellectual Disability Research, 60(1), 1–15.
3. World Health Organization. (2019). International classification of diseases (11th ed.). WHO.
4. Reynolds, C. R., & Fletcher-Janzen, E. (2007). Encyclopedia of special education. Wiley.
5. Rehabilitation Council of India. (2020). Handbook on special education and rehabilitation. RCI